दामोदर शर्मा के गीतकाव्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतनाः अध्ययन विसंगतियाँ

गिरिजा नरवरिया
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय मेहगांव
भिण्ड (म.प्र.)

शोध सार

गालव ऋषि की तपोभूमि पर स्वालियर अंचल की गीतिकाव्य परंपरा में प दामोदर शर्मा का नाम में सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चेतना का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है। गीत उनकी आत्मा में बसा हुआ एक नन्हा शिशु या जिसका पालन पोषण उन्होंने स्वयं किया। गीति शब्द का अर्थ है गाया हुआ या जिसे गाया जा सके। इस दृष्टि से उदिकला एवं संगीतात्मकता गीत का प्रधान गुण है। सामवेद तथा ऋग्वेद की सूचाओं, सिद्धों के घर्यापर्दा, आचार्य क्षेमेन्द्र, जयदेव के गीत गोविन्द और फिर विदयापति की पदावली मे हम गीतकाव्य परंपरा का उद्भव मान सकते हैं। भारतीय साहित्य परंपरा में गीति काव्य को प्रमुख स्थान दिया गया है। वैदिक युग से लेकर आज तक इस परंपरा का प्रवाह जारी है। सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, रमखान, जायसी आदि कवियों ने इस परंपरा को विकास की चरम स्थिति तक पहुंचा दिया। गीत प्रकृ ति और से कवियों से मिला अद्वतीय उपहार है जो मानव मन की अनुभूति का एक अन्तर्नाद है।

मुख्य बिन्दु–

सामाजिक,
सांस्कृतिक,
राष्ट्रीय,
चेतना,
गीतकाव्य,
प्रकृति ।

शोध प्रपत्र

ग्वालियर अंचल की गीत परंपरा को आगे बढ़ाने वाले में दामोदर शर्मा का जन्म 11 नवंबर 1934 को मह म.प्र. में उनकी नानी के घर पर हुआ था। इनके पिता का नाम बल्लभाचार्य शर्मा और माता का नाम श्रीमती लक्ष्मीबाई था। ये गोत्र से आदि गौड़ ब्राह्मण थे। इनके पिता के बारे में कहा जाता है कि उस वक्त इन्दौर में मालवा मिल के मालिक सेठ गोविंदराम सेक्सरिया थे, जो इनके पिता के परम भक्त थे। वे किसी की नौकरी करना पसंद नहीं करते थे फिर भी मालवा मिल के संचालक ने आग्रह किया और कहा कि मैं आपकी चेतन देने योग्य नहीं है किन्तु मंदिर में दुर्गा पाठ आपको ही करना पड़ेगा। साथ में यह भी तय हुआ कि हर माह की सामग्री आपके घर भेट दी जायेगी। वल्लभाचार्य जी को किसी प्रकार का कोई लालच नहीं था. नाही उन्हें अपने

परिवार के भविष्य की कोई चिन्ता थी इसी कारण के इंदौर के पंडितों को बुलाकर यज्ञ करते और सारा सामान व एकचित धन दान कर देते।

उनके इस व्यवहार ससुराल पक्ष बहुत परेशान एवं नाराज रहता था। और अंत में वही हुआ जिसका ससुराल प को डर था। एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इस घटना के प्रभाव से लक्ष्मीबाई का मानसिक संतुलन बिगाड़ गया और अब अपने पाँच बच्चों को पालना उनके लिए आसान न था। पं. दामोदर शर्मा ज्येष्ठ पुत्र होने की वजह से वर्ष की आयु से ही उनके जीवन में संघर्ष शुरू हो जाता है। फिर भी ननिहाल परिवार ही उनका सहायक बना।।

प. दामोदर शर्मा को बचपन से ही संगीत एवं गायन का शौक था। संयोगवश एक मंच पर जब इनकी मधुर वाणी कुछ कवियों ने सुनी तो इन्हें कविता एवं गोल लिखने के लिये प्रेरित किया गया। यह उसका सौभाग्य रहा कि आनंद शमिश्र और रामकुमार चतुर्वेदी बंचल के सम्पर्क में आकर उन्हीं की प्रेरणा से गीत कविताएं लिखने लगे। वालियरः मैं ष्साहित्य संघश नामक संस्था में सभी कवि अपनी वीर रस की कविताएं लिखते और सुनाते थे। एक बार पं दामोदर शर्मा ने भी स्वरचित दो गीत लिखकर सुनाये तो संगीक्षा करते हुए रामकुमार चतुर्वेदी चंचल जी ने उससे कहा– दामोदर तुम्हारे गोलों में छट दोष नहीं है। तुम गीत के क्षेत्र से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हो। उनका आशीर्वाद सटीक बैठा और 1960 तक आते–आते से एक गीतकार के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। ग्वालियर अचल में गीत काव्य परंपरा का एक लंबा और समृद्ध इतिहास रहा है।

गीत से नवगीत कण्वालियर ने अनेक श्रेष्ठ गीतकार दिये हैं, और आज भी यह सिलसिला जारी है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में खालियर अलका गीतिकाव्य की दृष्टि से अवदान न केवल गौरवमयी उपलब्धि है बल्कि गीत के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय भी है। गवालियर अंचल की संचीय गीत परंपरा अपने आप में अत्यंत संपन्न रही है। यहां के गोलकारों के बिना राष्ट्रीय स्तर का कोई भी कवि सम्मेलन अधूरा ही माना जाता था। ग्वालियर अंचल की गीत परंपरा को समय करने में दामोदर शर्मा का भरपूर योगदान रहा।

पं. दामोदर शर्मा के अधिकांश गीतों में प्रेम का भाव ही निव्याप्त हुआ है। में मानवप्रेस, राष्ट्रीय प्रेम, प्रकृतिप्रेम कमजोर वर्ग के प्रति का भाव सामाजिक विषमता को मिटाने का माद भाषा के प्रति प्रेम सत्य, अहिंसा और वसुव कुटुम्बकम का भाव जीव मात्र के प्रति प्रेम अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति अटूट निष्ठा, कर्तव्य बोध, सौन्दर्य बोध, आत्मा परमात्मा के संबंध को धरती पर मानन के प्रति परस्पर स्नेहपूर्ण संबंधों से जोड़ने का भाव उसके गीतों के चिलन का प्रमुख तत्व बनकर उभरा है। आज पाश्यात्य संस्कृति में इसकर कवि का मन बहुत दुःखी है। भोगा हुआ यथार्थ अवश्य कभी–कभी उनके गीतों से प्रकट हुआ है

करों का युग तब तक था, त्यागी सम्मानित होते थे।
आज त्याग के बदले उसको जीवन भर रोना पड़ता है।
जिनके लिये उम्र भर हमने अपने अधिकारों को छोड़ा।

उनके ही हाथों से हमको अपमानित होना पड़ता है।।[1]

नैतिक दायित्वों के प्रति युवा पीढ़ी की उदासीनता, व्यक्तिवादी सोच और विज्ञानिक युग में विलासी सुखों को पाने की लालसा, अशांति और स्वार्थी की छीना झपटी ने कवि को पूरे राष्ट्र को सोचने के लिए विवश किया है कि आज की युवा पीढ़ी के कदम किस और बढ़ रहे है। एक और में दामोदर शर्मा जी के गीत यदि स्वानुभूति व्यंजक एवं प्रणय लौ भावना परक है तो दूसरी और समष्टिभाव, लोकमंगल, सामाजिक यथार्थ परक, देशानुराग और राष्ट्रीयता के उदगार भी उनके काव्य में प्रचुरतापूर्ण गुंजित हुए हैं।

सामाजिक चेतना–

पं दामोदर शर्मा जी गीत की सिद्धि के लिये कठोर साधना और मानवीय संवेदना को आवश्यक मानते है। गीत के माध्यम से समाज को जागृत कर के नये प्रभात का सपना देखते है। वे भेदभाव के सारे बंधन टूट जाए साथ ही सत्य, शिव, सुन्दर की उपासना हो। आधुनिक दौर में हमारी उन्नति और विकास के बारे में प. दामोदर शर्मा लिखते हैं–

इतनी उन्नति की हमने
एकाकी पन का एहसास,
चिंता के दायरे बढ़े
और अधिक सालने लगा।
जहर भरा नीला आकाश,
बोझ अधिक डालने लगा।
बहुत तेज दौड़े लेकिन
मरुस्थल में रह गये खड़े।।[2]

उनके चिंतन का फलक बहुत व्यपाक है। वैचारिक दृष्टि से समय विश्व के लोक मंगल का चिन्तन एवं दर्शन ही इनके गीतों का प्रमुख भाव है। समाज के हर वर्ग की पीड़ा का एहसास उनके गीतों से मिलता है। वे समाज में फैली विषमता, अज्ञानता एवं भमौरी गरीबी को समूल नष्ट करने के पक्ष में रहे। दीन दुखियों और अभावग्रस्त जनजीवन के प्रति उनकी सहानुभूति का स्वर सदा ही दृष्टि गोचर हुआ–

मैं तो अभाव का बेटा,
भूख गरीबी दो माताएँ।
दुख दर्द मेरे भाई है,
बहिने है मेरी पीड़ाए..
अगर पेट में लगी जाग हो
उसे बुझाती सर्द हवाएँ,
नयनों को सुख देना चाहूँ,
घिर आती है घनी पाएँ।[3]

कवि ने अपने जीवन काल में अनेक उतार चढ़ाव का सामना किया है। देश अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त हो गया लेकिन देश के अन्दर की स्थिति उसके हृदय को पीड़ा देती थी। देश में फैली भुखमरी, गरीबी और लाचारी

देखकर उसका कवि हृदय नवयुवाओं को पुकार उठता था। उन्होंने क्रांति गीत से नवयुवाओं जागृत कर नवचेतना का संचार किया है–

भूख, गरीबी, बेकारी,
दीन, दीनता, लाचारी
कब तक दोओगे सिर
पर यह पाम हटाओ रे,
उठो देश के तरुण,
क्रांति का शाखा बजाओं रे[4]

कवि यह भी जानता है अगर देश के हर नागरिक को खुशहाल बनाना है तो युवाओं को इसके लिए आगे आना है। पड़ेगा। कवि नई पीडी को शोषण के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा दे रहा है। कवि कहता है हमारा शोषण करने वाला कोई और नहीं है वे हमारे अपने है लेकिन उनके अन्दर मानवता दयालुता खत्म हो गई है। स्वा ने उन्हें अंधा बना दिया है। इस लिए अब समय आ गया है हमे अपने अधिकारों के लिए इनके आगे हाथ नहीं फैलाने, शोषण को सहन करना भी एक तरह से गुलामी करना ही है। कवि का मानना है कि कार धक की गाँवा पर चलता है। और स्वारी का दीपक शीर्षक के घर जलता है। इसी लिए युवा पौड़ी को उसकी ऊर्जा में अवगत कराते हुए कहता है–

बस इतना ही काम करी
शोषण का रथ जाम करो
धर्मयुद्ध के लिए सुदर्शनचक्र उठाओ
देश के लिए तरुण क्रांति का शंख बजाओ

वे अपने देश की युवा शक्ति को शोषण का चक्रव्यूह तोहकर परिवर्तन लाने के लिए आगे बढ़ने की सलाह देते हैं–

दुःख दर्द की इस बस्ती में
हँसते गाते हुए चली।
खामोशी तो आत्माघात
शोर मचाते हुए चलो।।[5]

पं. दामोदर शर्मा सामूहिक चेतना के कवि है वे समाज के बीच रहकर दीन–दुखियों के अधिकार एवं कर्तव्यों के प्रति। चिन्तित होते हुए नवचेतना जागृत करते हुए कहते हैं–

हर मानव को जीने का अधिकार दो।
शुष्क हृदय में गीतों का संसार दो।
बनों भगीरथ जग को सुरसरिधार दो।
अभी बहुत सहना है तुमको कष्टों के आपाल रे
आज एशिया की धरती पर जागा नया प्रभात रे।

आज के दौर की सबसे भयानक समस्या मेहगाई है लेकिन हमारे देश के राजनीतिज्ञ इतने स्वार्थी और जालची हो गए है कि उन्हें दीन–दुखियों की वेदना न सुनाई देती है, और न दिखाई देती है। वे तो दौलत के पीछे भागने

वाले एवं धर्म के नाम पर लूटने वाले ठेकेदार बन चुके हैं। इनके झूठे जाल से बचने की जरूरत है–

मेहगाई है लूटमार है.
पग–पग पर धोखे बाजी।
सभी स्वार्थी में डूबे है।
पड़े है अथवा काजी,
इन सबकी अनदेखी करके
दोल बजाते हुए चलो।।

कवि यथार्थवादी रहा है उसने अपने जीवन में अंग्रेजी सत्ता की गुलामी से लेकर चीन, पाकिस्तान युद्ध की विशोषिका को भी अपनी आँखो से देखा है इस लिए वह समाज ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को कटुकमा के भाव से देखता है। कवि को आजादी की कीमत पता है कि इसे पाने के लिए हमारे देश के नौजवानों ने किस तरह अपने जीवन को न्योछावर किया था। लेकिन आज की युवा पीची पाश्चात्य संस्कृति में कर भगवादी जीवन को अपनाती जा रही है इस लिए संयुक्त परिवारों में बड़ों का मान सम्मान घटता जा रहा है। नवपीढ़ी काकी परिवार की ओर बढ़ने लगी है। परिणामात परस्पर फूट और अलगाव के कारण संयुक्त परिवार बिर है। टूटते रिश्तों के कारण संयुक्त परिवारों की नींव ही कमजार हो जाती है।

कृति के व्यक्तिगत जीवन पर कबीर दास जी का भी प्रभाव रहा। कवि स्वयं चाहता है कि व्यक्ति स्वायों न होकर समाज केन्द्रित हो, समाज का दृ ष्टिकोण सीमित न होकर व्यापक, उदार और लोक हितकारी हो तो समाज का दिनो दिन उत्थान निश्चित है।

सांस्कृतिक चेतना–

खुद उग जाऊँ सुख होता है, ठयूँ और को दुःख होता है।
किसी मूल्य पर बेच न पाऊंगा अपने इंसान को।।

कवि पं दामोदर शर्मा को अपनी सस्कृति से गहरा प्रेम है। कवि का पैतृक निवास राजस्थान भले ही हो लेकिन उनका पालन पोषण म.प्र. के महू में हुआ था इस लिए उन्हें दोनों राज्यों की संस्कृति से भी गहरा अनुराग है। संस्कृति ही हमारे देश की पहचान है जो विश्व के अन्य देशों से अलग पहचान रखती है। हमारे देश के सीज त्योहार परंपराएँ आषा–बेलिया, वेश–भूषा, खान–पान, रहन–सहन, परिवेश, आदि ऐसे ही माध्यम है जिनमें हमारे देश की संस्कृति वसती है। कवि को अपने गाँव की जीवन शैली एवं लिये पुते बच्चे आगन आज भी उनको याद आते है ये लिये पुले घर आगन सपनी में दिखते है, सीधी सरल स्वस्थ जीवन था, कहीं नहीं उलझाव, साथियों छूट गये है।

प. दामोदर शर्मा के गीतिकाव्य में भारतीय संस्कृति के लिए समर्पण, राष्ट्रप्रेरणा, जीवन के प्रति आस्या, वास्तविक जीवन मूल्य में भी ष्मनस्येएक्स वधस्यकम व कर्ममीकम् महात्मन वाली छवि की दृष्टिगोचर होती है। अर्थात महान व्यक्तियों के मन में जो विचार होता है, वहीं थे बोलते है और वही कृति में भी जाते है। पं. दामोदर शर्मा के पिता बल्लभाचार्य एवं माता लक्ष्मीबाई भी

कृष्ण की अक्ल मीराबाई के भजन एवं पूजा पाठ में गहरी आस्या रखती थी। पिता भी बहुत बड़े विदवान गौड ब्राह्मण थे उनका सारा दिन लोगों के घर कथा पाठ करने में ही निकल जाता था। एवं दिल खोलकर दान करना और संतों की अजन मण्डली के साथ नित्य राज करना तो हमारी संस्कृति की देन है। फलस्वरूप माता और पिता के संस्कार प. दामोदर शमी के व्यक्तित्व एवं कृ तित्व में समाहित हो जाते हैं, उन्हे भी अपने वेद–पुराणों में गहरी निष्ठा के साथ–साथ से पूर्ण आस्था होती है। उनके गीतों में वेद– मचाओं से प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

1. *दामोदर शर्मा, मन बंधा नहीं, प्रकाशक हिमांशु, संस्करण 1976*
2. *दामोदर शर्मा, कहना है असंभव, प्रकाशक अनुभव, संस्करण 2012*
3. *दामोदर शर्मा, सूली ऊपर सेज पिता की खण्ड काव्य, प्रकाशक चर–चर अर्पण न्यास मण्डवा शिखर, संस्करण 2001*
4. *पं. दामोदर शर्मा, गीत अष्टक, संपादक कमलकांत सक्सेना, संस्करण 2012*
5. *पं. दामोदर शर्मा, आस्था के शिखर।*